डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन – एक प्रेरक कहानी

"शिक्षकों को देश के सर्वोत्तम मस्तिष्कों में से होना चाहिए।"

ज्ञान, मेहनत और अच्छे विचार इंसान को ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं।

5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरुत्तनी में एक साधारण परिवार में एक बालक का जन्म हुआ। नाम था सर्वपल्ली राधाकृष्णन।

बचपन से ही उन्हें पढ़ने और ज्ञान प्राप्त करने का बहुत शौक था। उन्होंने मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से दर्शनशास्त्र की पढ़ाई की। आगे चलकर वे एक महान शिक्षक, दार्शनिक और लेखक बने।

उन्होंने कई विश्वविद्यालयों में दर्शनशास्त्र पढ़ाया और भारतीय दर्शन को दुनिया तक पहुँचाया। उनकी प्रसिद्ध पुस्तकों में Indian Philosophy और The Hindu View of Life शामिल हैं।

उनकी प्रतिभा और ज्ञान ने उन्हें भारत के उपराष्ट्रपति और फिर दूसरे राष्ट्रपति के पद तक पहुँचाया। 1954 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

लेकिन इतने बड़े पदों पर पहुँचने के बाद भी वे स्वयं को सबसे पहले एक शिक्षक मानते थे।

जब उनके जन्मदिन को मनाने की बात हुई, तो उन्होंने इसे अपना व्यक्तिगत उत्सव बनाने के बजाय शिक्षकों के सम्मान का दिन बनाने की इच्छा व्यक्त की। इसी कारण भारत में 5 सितंबर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है।

उनका एक प्रसिद्ध विचार है—

"शिक्षकों को देश के सर्वोत्तम मस्तिष्कों में से होना चाहिए।"

सीख

डॉ. राधाकृष्णन का जीवन हमें सिखाता है कि –

ज्ञान, मेहनत और अच्छे विचार इंसान को ऊँचाइयों तक पहुँचा सकते हैं।

शुरुआत चाहे छोटी हो, लेकिन सपने बड़े होने चाहिए।
सीखते रहिए, आगे बढ़ते रहिए और अपने ज्ञान से दूसरों का जीवन रोशन करते रहिए।